

# संपन्नता के छिपे हुए रहस्य

थिंक ऐंड ग्रो रिच के मशहूर लेखक द्वारा स्थायी  
समृद्धि पाने की अभूतपूर्व कुंजियाँ



## नेपोलियन हिल

पेट्रीशिया जी. होरन द्वारा 21वीं सदी के लिए संशोधित व संपादित

Hindi translation of *The Lost Prosperity Secrets of Napoleon Hill*

# संपन्नता के छिपे हुए रहस्य

थिंक ऐंड ग्रो रिच के मशहूर लेखक द्वारा स्थायी  
समृद्धि पाने की अभूतपूर्व कुंजियाँ



## नेपोलियन हिल

पेट्रीशिया जी. होरन द्वारा 21वीं सदी के लिए संशोधित व संपादित

Hindi translation of *The Lost Prosperity Secrets of Napoleon Hill*

**संपन्नता के  
छिपे हुए रहस्य**

# संपन्नता के छिपे हुए रहस्य

*थिंक ऐंड ग्रो रिच* के मशहूर लेखक द्वारा स्थायी  
समृद्धि पाने की अभूतपूर्व कुंजियाँ



## नेपोलियन हिल

अनुवाद: डॉ. सुधीर दीक्षित



**मंजुल पब्लिशिंग हाउस**



**मंजुल पब्लिशिंग हाउस**

*कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय*

द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462003

*विक्रय एवं विपणन कार्यालय*

7/ 32 , अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली- 110 002

वेबसाइट: [www.manjulindia.com](http://www.manjulindia.com)

*वितरण केन्द्र*

अहमदाबाद, बेंगलुरु, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई,  
हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

मूल अंग्रेजी पुस्तक

*द लॉस्ट प्रोस्पेक्टि सीक्रेट्स ऑफ़ नेपोलियन हिल*  
का हिन्दी अनुवाद

कॉपीराइट © 2009 , जे एम डब्ल्यू ग्रुप इन्कॉर्पोरेटेड, न्यू यॉर्क  
जे एम डब्ल्यू ग्रुप इन्कॉर्पोरेटेड, न्यू यार्क से अधिकृत  
सर्वाधिकार सुरक्षित

यह हिन्दी संस्करण 2017 में पहली बार प्रकाशित

**ISBN 978-81-8322-684-4**

हिन्दी अनुवाद: डॉ. सुधीर दीक्षित

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक  
की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुनः  
प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीके से, किसी भी रूप  
में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता  
है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

# अनुक्रम

## संपादक की प्रस्तावना

- 1 . अपने अद्भुत मस्तिष्क का इस्तेमाल करना सीखें
- 2 . सफलता की प्रभावशाली तरंगों का निर्माण करें
- 3 . सफलता की जादुई सीढ़ी के 16 पायदान
- 4 . रहस्योद्घाटन: कुछ लोग सफल क्यों होते हैं
- 5 . मेरे जीवन के सात महत्त्वपूर्ण मोड़
- 6 . आत्म-विश्वास ने चार दिन में एक व्यक्ति को कैसे बचाया
- 7 . आत्म-सुझाव की चमत्कारी कला
- 8 . सुझाव आदेश से ज़्यादा असरदार होता है
- 9 . प्रतिफल का अद्भुत नियम
- 10 . आपके गिरगिट-रूपी मन की शक्ति
- 11 . कुछ सबक़ जो मेरी 'असफलताओं' ने मुझे सिखाए

## संपादक की प्रस्तावना

वे साढ़े पाँच फुट के थे और उनका नाम नेपोलियन हिल था। बहुत से लोग उन्हें प्रेरक लेखन का जनक कहते हैं। निश्चित रूप से वे सभी सफलता गुरुओं के गुरु हैं। वे सारे समय की नंबर वन बेस्टसेलर पुस्तक *थिंक एंड ग्रो रिच* के लेखक हैं। हिल बहुत विपरीत परिस्थितियों का मुक़ाबला करके ऊपर उठे थे। जीवन में जल्दी ही उन्होंने इस सर्वव्यापी प्रश्न का जवाब खोजने का बीड़ा उठाया: आखिर वह कौन-सी चीज़ है, जो विजेताओं को विजेता बनाती है? उन्होंने दूसरी चीज़ों के अलावा यह पाया कि अमीर बचपन के बजाय गरीब बचपन सफलता की ज़्यादा गारंटी देता है। यह कई आश्चर्यजनक रहस्योद्घाटनों में से एक था।

एंड्रू कारनेगी के परिचय पत्र से लैस होकर हिल ने संसार के विजेताओं के रहस्य खोज निकाले। इसके लिए उन्होंने उस तरीक़े का इस्तेमाल किया, जो उनसे पहले किसी ने भी नहीं सोची थी: उन्होंने महानतम लोगों से पूछा कि वे महान कैसे बने। इस प्रक्रिया में तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद वे खुद विजेता बन गए और उन्होंने अंततः खुद को मार्कस ऑरेलियस, रैफ़ वॉल्डो इमर्सन और बेन फ्रैंकलिन की जमात में खड़ा पाया।

लेकिन नेपोलियन हिल बनने से पहले उन्होंने दो पत्रिकाएँ शुरू करके बचपन का सपना साकार किया। वे तब तक 25,000 लोगों में से आधों का “विश्लेषण” कर चुके थे और बाक़ी का करने की कगार पर थे, इसलिए उनके पास ज्ञान का भंडार आ चुका था। लेकिन बड़े दिल वाला वह छोटा आदमी तब भी पैँतीस के आस-पास था। पत्रिकाओं में लिखना पुस्तक लिखने से अलग होता है और इसमें दोटूक बातों और व्यक्तिगत जानकारी देने की ज़्यादा गुंजाइश रहती है।

उनकी पुस्तकें ज्ञान देती हैं, लेकिन अपनी पत्रिकाओं में नेपोलियन हिल पूरी तरह खुलकर बात करते हैं।

उनकी एक स्वीकारोक्ति यह है, “मेरे 36 में से 25 साल दुखद थे। लेकिन आज तक मेरा कोई भी काम इतना सफल साबित नहीं हुआ, न ही उससे मुझे इतनी सच्ची खुशी मिली, जितनी इस छोटी पत्रिका पर काम करने से मिली है।”

अपनी पत्रिका में आरामदेह होने की वजह से ही नेपोलियन हिल यह उजागर कर पाए: “लगभग पंद्रह साल पहले पहली बार जब मेरे मन में किसी पत्रिका का स्वामी और संपादक बनने का विचार आया, तो मैं हर बुरी चीज़ की धज्जियाँ उड़ाना चाहता था। शायद इसीलिए किस्मत के देवताओं ने उस वक़्त मुझे पत्रिका शुरू नहीं करने दी होगी...”

इस पुस्तक के एक से अधिक अध्यायों में हिल उस चीज़ के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं, जिसे कम दूरदर्शी लोग “असफलता” कहते हैं। उनका खुद का जीवन विजयी असफलताओं की अनवरत श्रृंखला थी। पचास साल पार करने के बाद उन्होंने इस बात पर हैरानी जताई कि एक पूरा दशक गुज़र गया था, लेकिन उन पर कोई व्यक्तिगत विपत्ति क्यों नहीं आई थी। नेपोलियन हिल अक्सर नीचे गिरने के बावजूद मैदान नहीं छोड़ते थे। वे कभी अपने “निश्चित मुख्य लक्ष्य” से नहीं डगमगाते थे। वे संसार के करोड़ों लोगों को यह सिखाने वाले थे कि तक्रदीर को भी बदला जा सकता है और असफलताओं से भी लाभ उठाया जा सकता है। इंसान अपने अनुभव से कितनी अच्छी तरह सीख सकता है, और कैसे सीख सकता है?

बाद में उन्होंने पूरे अधिकार से कहा था, जो सिर्फ़ अनुभव से ही आ सकता है, “सफलता के लिए व्याख्या की ज़रूरत नहीं होती। असफलता बहानों की अनुमति नहीं देती।”

हिल का जन्म 1883 में वाइज़ काउंटी, वर्जीनिया की पहाड़ियों में एक कमरे के केबिन में हुआ था। उन्होंने तेरह वर्ष की उम्र में अपना लेखन करियर शुरू किया और कस्बे के छोटे अखबारों के लिए “पहाड़ों के रिपोर्टर” का काम करने लगे। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों से उबरने वाले असली लोगों के बारे में असली तथ्यों के प्रति अपनी भूख कभी नहीं मिटने दी, जिनमें वे खुद शामिल थे। इसी अनुभव से उन्होंने सीखा कि दबंग लीडर्स से उनकी पराजयों और विजयों के बारे में साक्षात्कार कैसे लें।

नेपोलियन हिल असफलता-से-सफलता की कहानियों में से एक हैं। वे बहुत छोटे थे, तभी उनकी माँ का देहांत हो गया था। उनके पिता ने एक शिक्षित, निर्भीक महिला से विवाह किया, जो गरीबी से चिढ़ती थीं, जैसा हिल ने बाद में बताया। हिल की सौतेली माँ ने पारिवारिक स्टोर और खेत सँभाले और उनके पिता को 40 साल की उम्र में डेंटल स्कूल भेजा। उन्होंने ही नेपोलियन को वह रीढ़ प्रदान की, जिसकी ज़रूरत उन्हें वर्जीनिया घाटी से निकलने के लिए थी। उनकी सौतेली माँ ने ही नेपोलियन के मन में वह विचार रखा, जिसके लिए वे बाद में सबसे ज़्यादा मशहूर होने वाले थे: “इंसान का मन जो भी सोच सकता है, उसे वह हासिल भी कर सकता है।”

नेपोलियन हिल का यह शुरुआती लेखन, जिसे इससे पहले शायद ही कभी देखा गया है, ताज़गी भरा और ज्ञानवर्धक है। उनकी पत्रिकाएँ वे शिशु थीं, उनके खुद के पन्ने वे साँचे थे, जिनकी बुनियाद पर उन्होंने सारे समय की सबसे प्रेरक पुस्तकों में से एक लिखी।

पेट्रीशिया जी. होरन

## अपने अद्भुत मस्तिष्क का इस्तेमाल करना सीखें

**मा**नव मस्तिष्क में बहुत से गुण और प्रवृत्तियाँ रहती हैं। जैसे पसंदगी-नापसंदगी, आशावाद और निराशावाद, घृणा और प्रेम, सृजनात्मकता और विध्वंसात्मकता, रहम और बेरहमी आदि। मस्तिष्क इन सबके अलावा बहुतेरे दूसरे गुणों का समुच्चय होता है। कुछ मस्तिष्कों में इनमें से किसी एक गुण का वर्चस्व रहता है और कुछ में दूसरे गुणों की प्रधानता नज़र आती है।

किसी व्यक्ति के प्रधान गुण काफ़ी हद तक उसके परिवेश, प्रशिक्षण, सहयोगियों और खास तौर पर उसके विचारों से तय होते हैं! जिस भी विचार को मस्तिष्क में लगातार रखा जाता है या जिस भी विचार पर एकाग्रता से चिंतन किया जाता है और चेतना में रखा जाता है, अक्सर यह अपने जैसे दूसरे गुणों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

विचार ज़मीन में बोए गए बीज जैसा होता है, क्योंकि यह अपने जैसी फ़सल देता है, कई गुना बढ़ जाता है और विकास करता है; इसलिए मस्तिष्क में किसी भी विनाशकारी विचार को रखना खतरनाक होता है। ऐसे विचार देर-सबेर शारीरिक कार्य के ज़रिये अभिव्यक्ति चाहेंगे।

जिन विचारों को मस्तिष्क में रखा जाता है और जिन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, आत्म-सुझाव के सिद्धांत के ज़रिये वे जल्दी ही कार्यरूप में घनीभूत होने लगेंगे। हम बाद में इस सिद्धांत पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

यदि आत्म-सुझाव का सिद्धांत स्कूलों में पढ़ाया और समझाया जाए, तो यह बीस साल के अंदर संसार के सारे नैतिक और आर्थिक मानदंडों को बदल देगा। इस सिद्धांत के ज़रिये मानव मस्तिष्क सकारात्मक सोच या सकारात्मक नज़रिये जैसी सृजनात्मक प्रवृत्तियों पर लगातार ध्यान केंद्रित करके अपनी विनाशकारी प्रवृत्तियों से मुक्त हो सकता है। मानव मस्तिष्क के गुण तभी जीवित रह सकते हैं, जब उन्हें पोषण दिया जाए और उनका इस्तेमाल किया जाए। पोषण और इस्तेमाल का नियम पूरी सृष्टि में कार्यरत है। यह हर उस चीज़ पर लागू होता है, जो जीवित है और विकास करती है। इस नियम में यह बताया जाता